Hindustan Times- 07- November-2022

G Asok Kumar and Gajendra Singh Shekhawat

Celebrating rivers of India

The sixth edition of Ganga Utsav - The River Festival, was organised in the Capital on Friday by the National Mission for Clean Ganga (NMCG) in the presence of politicos, bureaucrats and diplomats. The event saw cultural performances, folk music renditions, film screening and storytelling. The performances touched upon issues pertaining to the rivers of India, such as river conservation, the river-people connect and creating economic opportunities for those living in the Ganga basin. The chief guest for the morning session, **G Kishan Reddy**, Union Minister for Culture, Tourism and Development of North Eastern Region, said, "Conservation of rivers is the biggest responsibility, which we have to fulfil together." In the evening session, **Gajendra Singh Shekhawat**, Union Minister of Jal Shakti, said, "The expansion of civilisation is not possible without rivers; they are the elixir of life. Ganga is not just our national river, but also our cultural heritage." Among those present at the event were **Bishweswar Tudu**, Minister of State, Jal Shakti and Tribal Affairs, **Freddy Svane**, Danish Ambassador to India, and **G Asok Kumar**, director general, NMCG. HTC

G Asok Kumar (second from left); G Kishan Reddy (third from left); Bishweswar Tudu (fifth from left)

File No.T-74074/10/2019-WSE DTE

Millennium Post- 07- November-2022

India hopes for fair negotiations at UN climate change summit

COP27 opens with inclusion of 'loss and damage' in agenda

OUR CORRESPONDENT

NEW DELHI: The United Nations' climate change summit opened in Egypt on Sunday with the inclusion of 'loss and damage' finance in the official agenda and India hoping that fair negotiations on it would follow.

Loss and damage is a term used to refer to the consequences of climate change that go beyond what people can adapt to, or when options exist but a community doesn't have the resources to access or utilise them.

Financing or a new fund for addressing loss and damage -- for example money needed for relocating people displaced by floods -- has been a long-pending demand of poor and developing countries, including India. But rich countries have avoided discussions on it for over a decade. "With the inclusion of this agenda item, India will be engaging constructively and actively on the subject during the course of discussions at COP27 and hoping that fair negotiations on loss and damage follow," read a blog post written by Union Environment Minister Bhupender Yadav.

Sharm el-Sheikh will host the COP27 UN Climate Summit starting November 6 PTI

"India welcomes adoption of agenda item 'Loss and Damage' at COP27," the minister said. He said financial mechanisms under the United Nations Framework Convention on Climate Change, such as Global Environment Facility, Green Climate Fund and Adaptation Fund, are under-funded and are not able to mobilise or deliver funds for loss and damage due to climate change.

Accessing funding from these mechanisms is complex and time taking. Adaptation funding is highly inadequate and loss and damage funding has been almost negligible. Taking note of the situation, India along with other countries had been pursuing the adoption of an agenda item on loss and damage finance, the minister said.

"With the inclusion of this agenda item, India will be engaging constructively and actively on the subject during the course of discussions at COP27 and hoping that fair negotiations on loss and damage follow

India also expected action from rich countries in terms of climate finance, technology transfer and strengthening the capacity of poor and developing countries to combat climate change.

"India believes COP27, themed 'Together for Implementation', should turn out to be the 'COP for Action' in terms of climate finance, technology transfer and capacity building. "The scale of the problem facing the world is huge. Action cannot be delayed and hence concrete solutions must come up and implementation must start with COP27," Yadav said.

The 27th edition of the Conference of Parties (COP) to UNFCCC will also see the country seeking clarity on the definition of climate finance.

The absence of a definition of climate finance allows developed countries to greenwash their finances and pass off loans as climate-related aid.

"India is very clear that the world needs a multilaterally agreed definition of climate finance. India does not recognise loans to be climate finance because it pushes vulnerable countries further into debts. Our focus at COP27 during our negotiations is thus on concessional and climate-specific grants," Yadav said.

The Morning Standard- 07- November-2022

QUICK TAKE

PROTECT GROUNDWATER RESOURCES

INDIA may soon face empty aquifers thanks to the careless cultivation of water-intensive crops. The latest ICRISAT report says groundwater extraction is over 100% in leading agricultural states, negating rainwater harvesting efforts. Alarmingly, the ground above empty aquifers is sinking in some regions because of excessive extraction. The government must act quickly to stop exploitative groundwater use and avoid the prospect of food insecurity and the resultant impact on people's livelihoods. A revised agriculture policy must ensure that weather and terrain determine the crop type. For instance, dry regions should not deal with water-intensive crops like sugarcane, wheat and rice.

Rajasthan Patrika- 07- November-2022

बदल रहा मौसम चक्र | **लू, शीतलहर के साथ अतिवर्षा के दिन भी बढ़े**

प्रदेश में मौसम भूला अपनी राह

गर्मी-सर्दी-बरसात सब का बदला समय

पत्रिका स्पॉटलाइट

तापमान में परिवर्तन के साथ सीजनल शिफ्ट को लेकर पर्यावरणविद् चिंतित, सरकार बेफिक्र

जया गुप्ता
patrika.com

जयपुर . राजस्थान में भी जलवायु परिवर्तन के संकेत मिल रहे हैं। गर्मी, सर्दी हो या बरसात सबका समय बदल गया है। इस साल यह असर अधिक दिखाई दिया। पहले शीतलहर से प्रदेश ठिठुरा, फिर भीषण लू की चपेट में रहा और मानसून सीजन में बाढ़ का लोगों को सामना करना पड़ा। बदल रहे मौसम चक्र को लेकर पर्यावरणविद् चिंतित हैं जबकि सरकार बिल्कुल बेफिक्र है। जलवायु परिवर्तन के कारण उपज रही स्थितियों से निपटने के लिए कोई कार्य नहीं किए जा रहे हैं।

इस साल: सब कुछ उलटा-पुलटा...

शीतलहर: जनवरी 2022 में 31 में से 18 दिन तक शीतलहर चली। शीतलहर के साथ सात दिन तक बारिश-ओलावृष्टि।

भीषण लू: अप्रेल 2022 पिछले 122 साल में सर्वाधिक गर्म रहा है। पूरे सीजन में 51 दिन तक लू चली। अप्रेल से जून तक ही गर्मी का सीजन होता है। इस बार प्रदेश में 15 मार्च से लू चलना शुरू हो गई थी।

भारी बारिश के दिन अधिक: मानसून सीजन के कुल 122 दिन में 61 दिन सामान्य से अधिक बारिश हुई। पश्चिमी व उत्तरी राजस्थान के कई जिलों में औसत से दोगुनी बारिश हुई। एक दिन में 100 से 250 मिमी तक बारिश हुई।

भीमसागर. भतवासी गांव में जलमग्न सोयाबीन फसल निकालता किसान।

4 प्रकार: यों हो रहा जलवायु परिवर्तन

तापमान में बढ़ोतरी

रात के तापमान में बढ़ोतरी हो रही है। रात का तापमान औसत से अधिक दर्ज किया जा रहा है। वहीं ऐसे दिनों की संख्या बढ़ रही है, जिनमें अधिकतम तापमान अधिक दर्ज किया जा रहा है। भीषण लू और शीतलहर अधिक चल रही है। यह असर अमरीका, यूके सहित अन्य कई देशों में देखने को मिल रहा है।

सीजनल शिफ्ट

अभी तक मौसम विभाग जून से सितम्बर तक बारिश का सीजन मानता है। अब जून में भीषण गर्मी पड़ रही है और अक्टूबर में बारिश हो रही है। वहीं पश्चिमी राजस्थान में बारिश बढ़ रही है। पहले पश्चिमी राजस्थान औसतन 150 मिमी बारिश होती थी, अब 200-250 मिमी तक औसतन बारिश हो रही है।

अधिक बारिश

सीजन के औसत में बदलाव नहीं है बल्कि पूरे सीजन की बारिश कम दिनों में हो रही है। पहले जहां सीजन की औसत बारिश 40 दिन में होती थी, अब कई जिलों 15-20 दिन में ही हो रही है। इस बार श्रीगंगानगर में पूरे सीजन की बारिश 3-4 दिन में हो गई थी।

सूखा भी अधिक

कोटा संभाग के जिलों में पिछले दो-तीन वर्ष से हर साल बाढ़ की स्थिति बन रही है। इसी प्रकार 9-10 जिले सूखे को झेल रहे हैं। हर साल किसी न किसी जिले में सूखा पड़ रहा है। पहले के सालों में भी यह स्थिति आती है, लेकिन इस साल ज्यादा जिलों में ऐसे हालात आए हैं।

2021 में यों प्रभावित हुए किसान

बाढ़

प्रभावित जिले	09
प्रभावित किसान	7,21,103
सहायता	₹4,28,46,75,482

सूखा

प्रभावित जिले	10
प्रभावित किसान	11,57,008
सहायता	₹9,83,78,64,099

ओलावृष्टि

प्रभावित जिले	05
प्रभावित किसान	21,204
सहायता	₹19,28,28,489

बदलाव का हम पर यों हो रहा असर

फसल खराब: हर सीजन में फसलें खराब हो रही हैं। इसका सीधा असर खाद्यान्न आपूर्ति पर पड़ेगा।

गिरता भूजल स्तर: एक ही दिन में अधिक बारिश होने से पानी जमीन के भीतर समाहित नहीं हो पाता और नालों में बह जाता है।

बीमारियों का खतरा: डेंगू, चिकनगुनिया सहित अन्य मौसमी बीमारियों का समय बढ़ गया है।

रोजगार पर संकट: फसलें खराब, रोजगार पर भी संकट बढ़ रहा है।

एक्सपर्ट कमेंट

शहरी क्षेत्र में दिख रहा अधिक असर, बढ़ रहा ताप

जलवायु परिवर्तन का कारण वैश्विक भी है और स्थानीय भी। शहरी क्षेत्र में असर अधिक है। तापमान तेजी से बढ़ रहा है। शहरी क्षेत्र में ठोस सतह (सीमेंट-क्रंक्रीट) अधिक है। यह सतह दिन में रेडिएशन को ग्रहण कर लेती है और सूर्यास्त के बाद छोड़ती है। इसी कारण रात का तापमान बढ़ रहा है। जलवायु परिवर्तन की प्रक्रिया बहुत धीमी है और इससे निपटने के लिए हमें एडॉप्टेशन के रास्ते पर जाना होगा। लोग कुछ आदतों में बदलाव करें और सरकार भी छोटे-छोटे प्रयास करे। शहरी क्षेत्र में हरियाली बढ़ाई जाए। नए जलाशय तैयार किए जाएं। काले रंग की सतह अधिक रेडिएशन सोखती है, उसका रंग बदला जाए। रूफ टॉप को हरा-भरा किया जाए। फुटपाथ पर सीमेंट की टाइल लगाई जाती हैं, उसके बीच-बीच में घास लगाई जाए। ऐसे प्रयासों से हम कुछ बदलाव ला सकेंगे।

प्रो. महेश कुमार जाट,
पर्यावरणविद्, एमएनआईटी